आभार

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

शोध कार्य के प्रेरकों में सर्वप्रथम मैं अपने माता-पिता श्रीमती मधु शर्मा व श्री बालकृष्ण शर्मा के प्रति प्रणामाञ्जलि अर्पित करती हूँ जिनकी अमोघ प्रेरणा एवं शुभाशीर्वाद ने मेरी शोध कार्य के प्रति निष्ठा बनाए रखी।

मेरे श्रद्धेय गुरु और निर्देशक 'डॉ. योगेश शर्मा' एवं 'डॉ. विनोद कुमार झा' के प्रति कृतज्ञ हूँ जिनके श्रेष्ठ निर्देशन में मेरा यह शोध कार्य सम्पन्न हुआ।

मैं मानविकी संकाय की डीन प्रो. भारती पाण्डे के प्रति श्रद्धानवत हूँ, जिनके आशीर्वाद से शोध कार्य पूर्णता को प्राप्त हुआ।

मैं अपनी श्वश्रू श्रीमती 'सुशीला देवी' एवं ज्येष्ठ भ्राता 'श्रीराम जोशी' के प्रति सदैव श्रद्धानवत एवं कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे पारिवारिक दायित्वों और चिन्ताओं से मुक्त रखकर निरन्तर निर्विघ्न अध्ययन करने की सुविधा एवं प्रेरणा प्रदान की।

मैं अपने भ्राता 'राहुल शर्मा' के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिसने मेरे इस शोध कार्य के सम्पन्न होने में अत्यधिक सहयोग दिया।

इस शोध कार्य में स्नेहासिक्त प्रेरणा, धैर्य, साहस एवं आत्मविश्वास प्रदान करने वाले मेरे पति 'श्री श्याम जोशी' के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करती हूँ जिन्होंने मुझे अधीरता के क्षणों में अविचल रहने की प्रेरणा दी, क्योंकि मेरा यह कार्य उनके स्नेह व प्रोत्साहन का ही फल है।

साथ ही मैं मेरे पुत्र 'पर्व जोशी' को अपार स्नेह प्रदान करती हूँ, जिसका शोध की पूर्ति में अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ।

मैं डॉ. मुकेश कुमार शर्मा के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने अपना अमूल्य समय और सहयोग प्रदान किया।

अपने सभी मित्रों का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने शोध कार्य सम्पन्न कराने में मुझे सहयोग प्रदान किया।

वनस्थली विद्यापीठ के केन्द्रीय पुस्तकालय के समस्त कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद देती हूँ जिनके सहयोग से ग्रन्थों का अध्ययन कर शोध कार्य सम्पन्न किया। मैं उन सभी ग्रंथों व ग्रंथकारों के विचारों के प्रति आभार प्रदर्शित करती हूँ जिनसे प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से लाभान्वित हुई हूँ।

अन्त में मैं 'अंजली कम्प्यूटर्स', जयपुर के समस्त सदस्यों का आभार व्यक्त करना चाहूँगी, जिन्होंने एकाग्रता व श्रमपूर्वक टंकण कार्य किया।

शोध प्रबंध के लेखन में मैंने अपनी समझ के अनुसार पूर्ण सावधानी रखी है, किन्तु कमियाँ और दोष रह गयी होंगी। अतः समालोचक उन्हें पहचान कर क्षमा करें।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

– सुलक्षणा शर्मा

आमुख

'व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा: अनेनेति व्याकरणम्' अर्थात्-जिसके द्वारा शब्दां की व्युत्पत्ति होती है, उसे व्याकरण कहते हैं। व्याकरण शब्द वि - आङ् (आ) - कृञ् (कृ) + ल्युट् प्रत्यय से निष्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ है-विग्रह अथवा विश्लेषण।

व्याकरण की गणना वेद के षड् अङ्गों में की जाती है। वेदाङ्ग का अर्थ है- 'वेदस्य अङ्गानि' अर्थात् वेद के अङ्ग। वेदों के अर्थों को जानने के लिए जिन शास्त्रों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'वेदाङ्ग' कहते हैं। व्याकरण को वेदरूपी पुरुष का प्रमुख अङ्ग कहा गया है।

यथा-

'मुखं व्याकरणं स्मृतम्।।'

व्याकरण वह शास्त्र है, जिसमें प्रकृति प्रत्यय के विभाग द्वारा साधु शब्दों का विवेचन किया जाता है। रामायण, गोपथ, ब्राह्मण, मुण्डकोपनिषद् आदि ग्रंथों में शब्दशास्त्र के लिए व्याकरण शब्द का प्रयोग देखा जाता है जैसे कि रामायण में-

ननु व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधाश्रुतम्।

बहु व्याहरतानेन न किञ्चिदपदभाषितम्।।

महामुनि पतञ्जलि व्याकरण को 'शब्दानुशासन' कहते हैं। 'अथ शब्दानुशासनम्', 'केषां शब्दानाम?' 'वैदिकानां लौकिकानाञ्चेति।'

सामान्य रूप से शब्दों की सिद्धि को ही व्याकरण का प्रयोजन कहा गया है। आचार्य पाणिनि संसार के अन्य वैयाकरणों में से सर्वश्रेष्ठ वैयाकरण माने जाते हैं। आचार्य पाणिनि की रचना 'अष्टाध्यायी' एक अनुपम निधि है। इसमें देववाणी भी परम गौरवान्वित है तथा इससे समस्त वाङ्मय प्रकाशित हैं।

'भट्टिकाव्यम्' महाकवि भट्टि की उपलब्ध एकमात्र रचना है। महाकवि भट्टि अपने समय के असाधारण विद्वान थे। ये व्याकरण और काव्यशास्त्र के धुरन्धर एवं मर्मज्ञ पण्डित थे।

व्याकरणशास्त्र की कठिनाइयों को दूर करते हुए काव्य के द्वारा व्याकरण सिखाने का प्रयत्न करने का श्रेय भट्टि को है। इसमें उन्हें पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है।

यह काव्य व्याकरण सिखाने के लिए ही रचा गया था। अत: भट्टिकाव्यम् के इस सफलतम प्रयास को और अधिक उजागर करने के लिए तथा वैयाकरणों के लिए इस कृति को उपयोगी बनाने के लिए मैंने अपने शोध प्रबन्ध हेतु 'भट्टिकाव्यम्' के 'प्रकीर्ण काण्ड' को चुना।

प्रकीर्णकाण्ड-(1-5 सर्ग) में रामजन्म, सीता विवाह, राम का वन गमन, सीता हरण तथा राम के द्वारा सीतान्वेषण का उपक्रम वर्णित है। इसमें कृत् प्रत्ययों का मुख्यतया वर्णन है।

इस प्रकार उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि 'भट्टिकाव्यम्' एक उत्कृष्टतम् साहित्यिक कृति है। ६४१ ई. में भट्टिकाव्यम् का निर्माण हुआ। उस समय से लेकर आज तक भट्टिकाव्यम् पर अनेक शोध कार्य हुए हैं। भट्टिकाव्यम् पर हुए शोधकार्यों का निरीक्षण A Bibliography of Doctoral Dissertation accepted inter University" (1957-1990), University News (1957-2004), प्राच्य ज्योति (1957-1991) तथा पत्र-पत्रिकाओं में करने के पश्चात् 'भट्टिकाव्यम्' पर हुए शोधकार्यों का विवरण जो मैंने प्राप्त किए है, वो इस प्रकार है-

क्र.सं.	**शीर्षक**	**नाम**	**विश्वविद्यालय**	**वर्ष**
1.	भट्टिकाव्य लिटरेरी स्टडी ऑफ	रामललित मिश्र	इलाहबाद	१९६३
२.	भट्टि एण्ड हिज काव्य	काशीनाथ मुखोपाध्याय	बर्दवान	१९८०
३.	भट्टिकाव्य क्रिटिकल स्टडी ऑफ	नीलांजना शाह	सुबोध चन्द्र गुजरात	१९७०
४.	भट्टि-ओ तन्हार काव्य	काशीनाथ मुखोपाध्याय	बर्दवान	१९७१-८०
५.	भट्टिकाव्य का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन	अनिल वालिया	शिमला	कार्यरत
६.	भट्टिकाव्य एवं पाणिनीय व्याकरण (तुलनात्मक अध्ययन)	शशिबाला शर्मा	हरियाणा	१९९४
७.	भट्िकाव्य एण्ड ग्रामेटिकल पोयम	के. महादेवन	जादवपुर	कार्यरत

इन कार्यों का विहंगावलोकन करने पर ज्ञात होता है कि 'भट्टिकाव्यम्' के अन्य पक्षों पर यथा-भाषा वैज्ञानिक, आलोचनात्मक, तुलनात्मक व साहित्यिक दृष्टि से अनेक शोध कार्य हुए है, तथापि मेरे द्वारा अन्वेषित विषय पर कोई शोध कार्य दृष्टिगत नहीं हुआ है।

जैसा कि हम जानते हैं कि संस्कृत व्याकरण, संस्कृत वाङ्मय के मर्म को जानने के लिए अति आवश्यक व उपयोगी है। पाणिनीय शास्त्र महच्छास्त्र है और अन्य शास्त्रों में प्रवेश करन के लिए इसका ज्ञान कुञ्जिकाभूत है।

इस प्रकार व्याकरण की दृष्टि से भी 'भट्टिकाव्यम्' पर शोध कार्य हो सकता है। इस विषय पर किसी ने विचार नहीं किया है। अत: 'भट्टिकाव्यम्' की विषयवस्तु के मर्म को व्याकरण की दृष्टि से जानने के लिए मेरे श्रद्धेय गुरूजी की प्रेरणा से व्याकरणात्मक दृष्टि से 'भट्टिकाव्यम्' ग्रंथ को अपनाते हुए मैंने अपने शोध प्रबंध का विषय **'भट्टिकाव्यम्' के प्रकीर्ण काण्ड (१-५ सर्ग) का व्याकरणात्मक परिशीलन** चुना है। क्योंकि इसमें व्याकरण, संधि, समास, कारक, कृत्त एवं तद्धित प्रत्यय, उपसर्ग एवं क्रियापदों का प्रचुर प्रयोग किया गया है। अत: इस विषय पर प्रस्तुत शोध प्रबन्ध मौलिक एवं नवीन प्रयास है।

अपने-अपने स्थान पर 'भट्टिकाव्यम्' तथा 'व्याकरण' का क्षेत्र विस्तृत है, किन्तु मेरे अध्ययन व शोध प्रबंन्ध का आधार 'भट्टिकाव्यम्' पर उपलब्ध टीका ग्रंथ तथा अष्टाध्यायी से संबंधित मूल ग्रंथ होंगे।

विषय के अविराम क्रमबद्ध और सुव्यवस्थित अध्ययन के लिए शोध प्रबन्ध को आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसके अतिरिक्त उपसंहार अलग से दिया गया है।